# भगवान के उपहार

अक्टूबर 1996 में आईएमएक्स (IMX) के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स ने एक संकाय सदस्य के सुझाव पर सहमति जाहिर की, जिससे पीजीपी (PGP) में प्रवेश 120 छात्रों से बढ़कर 180 हो सके, यद्यपि निदेशक इसके लिए इक्षुक न। आवश्यक भौतिक बुनियादी ढांचा बनाने के काम में तेजी लायी गयी जुलाई 1997 में प्रवेश बढ़कर 180 हो गया।

हालांकि, सामरिक प्रबंधन (strategic Management) जैसे कुछ क्षेत्रों में संकाय की समस्या भी थी। दूसरे वर्ष में दो अनिवार्य पाठ्यक्रमों, "**रणनीति तैयार का करना**" और "**रणनीति का कार्यान्वयन करना**" पाठ्यक्रमों की दो दो कक्षाएं पढ़ने के लिए केवल दो संकाय सदस्य प्रो पाठक और प्रो बोस थे। प्रो पाठक के पास विषय की प्रासंगिक योग्यता और अनुभव था। प्रोफेसर बोस की इस विषय में कोई औपचारिक योग्यता नहीं थी, लेकिन "एक उद्यमशीलता विकास संस्थान" का अनुभव होने के कारण, इस विषय में रुचि पैदा हो गयी थी।

अगले साल (1998) पीजीपी प्रवेश सेवन में 180 की वृद्धि के कारण, दोनों पाठ्यक्रमों के तीन तीन खंड (section) बने। हैरानी की बात कि निर्देशक ने प्रोफेसर बोस को 2 साल की छुट्टी देने का फैसला किया। प्रोफेसर पाठक अकेले पड़ गए। अधिकांश संकाय सदस्य 2-3 पाठ्यक्रम से ज्यादा नहीं पढ़ा रहे थे, लेकिन संस्थान की आवश्यकताओं को देखकर प्रो पाठक 1998-99 शैक्षडिंक वर्ष में पीजीपी के दोनों पाठ्यक्रमों के तीनो खण्डों को पढ़ाने के लिए सहमत हो गए, इस तथ्य के बावजूद कि अधिकांश अन्य लोगों के विपरीत वे एमडीपी / एफडीपी, रिसर्च अनुसंधान, सम्मेलनों आदि में भी सक्रिय रूप से भाग लेते थे (जिस पर बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स बार बार ज़ोर देता था), जिसके कारण वह नए वैकल्पिक पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ नहीं कर पा रहे थे ।

समस्या ने और भी गंभीर हुई जब अप्रैल 1 99 8 में उन्हें निदेशक की इच्छाओं के खिलाफ पहला डीन (अकादमिक मामले) के रूप में नियुक्त किया गया, बोर्ड की एक समिति ने चयन किया था। निदेशक संभवतः इसलिए भी क्रुद्ध थे क्योंकि डीन की व्यवस्था प्रोफेसर पाठक के सुझाव पर की गयी थी जो उन्होंने बोर्ड के अनुरोध पर संस्थान निदेशक के विरोध में हुए एक बड़े आंदोलन की रोकने वाली रिपोर्ट में दी थी। शायद ही पूरे आईआईएम प्रणाली के 30 वर्षों के इतिहास में किसी भी संकाय सदस्य ने अन्य ज़िम्मेदारिया निभाने के साथ साथ ही एक शैक्षणिक वर्ष में दो विषयों के 6 पाठ्यक्रमों को पढ़ाया था। डीन (एए) का नया कार्यालय स्थापित करना, (जिसमें निदेशक द्वारा बनाई गई सभी उलझनों से भी निपटना था), स्वयं में ही एक बड़ा कार्य था।

उन्होंने अतिथि शिक्षकों को पाने के लिए प्रयास किए लेकिन कोई प्रयत्न सफल नहीं हो रहा था । हालांकि, एलबीएस (London Business School) के एक संकाय सदस्य ने अर्ध पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए राज़ी हुए। लेकिन यह लगातार दो सत्रों में तीन खंडो के पाठ्यक्रमों को पढ़ाना और छात्रों का मूल्यांकन समय में पूरा करने का भार उठाने के लिए यह व्यवस्था पर्याप्त नहीं थी । डॉ। पाठक ने दोनों विषयों के पाठ्यक्रमों को में विलय करके 1.5 पाठ्यक्रमों (60 घंटे के 2 पाठ्यक्रमों के बदले 45 घंटे का एक पाठ्यक्रम ), परियोजना प्रस्तुतियों (project presentation) / समापन सत्र (concluding session) के 9 घंटे के समय की बचत (परियोजना और समापन सत्र दो विषय के बजाय अब एक ही में होना था) उन्होंने "बदलाव और परिवर्तन

DO NOT COPY

प्रबंधन" के दो टॉपिक को अन्य वैकल्पिक पाठ्यक्रमों में स्थान्तरित कर दिया। इस प्रकार अन्य जिम्मेदारियां के अलावा वह जुलाई- सितम्बर वाले एक सत्र में ही 4.5 पाठ्यक्रम के लगभग 4 पाठ्यक्रम भार ले के ।

संकाय परिषद की स्वीकृति प्राप्त करना आसान नहीं था, जहां कुछ मुखर संकाय सदस्यों ने साठ घंटे के दो पाठ्यक्रमों 45 घंटे के एक को पाठ्यक्रम बनाने पर पर सवाल उठाया। वे यह तर्क मानने को तैयार नहीं थे कि किसी और संसथान में यह विषय 4.5 पाठ्यक्रम से अधिक नहीं है, जैसा की यहाँ करने का सुझाव था। कुछ संकाय सदस्यों, जो खुद 3-4 पाठ्यक्रम से अधिक नहीं कर रहे थे, ने कहा कि दो पाठ्यक्रमों को एक संकाय सदस्य की असुविधा से बचाने के लिए विलय नहीं किया जाना चाहिए। वे यह सुनने को भी तैयार नहीं थे कि किसी भी संस्थान में कोई संकाय सदस्य एक शैक्षणिक वर्ष में 6 पाठ्यक्रम का भार नहीं उठाता। अंत में छुब्ध होकर प्रोफेसर पाठक ने संकाय परिषद से पूछा, यदि वह बीमार पड़ जाए या मर जाए, तो संस्थान कैसे पाठ्यक्रम चलाएगा? इसका कोई जवाब नहीं था और पाठ्यक्रम की विलय को मंजूरी दे दी गई थी।

डेढ़ महीने बाद डॉ पाठक को, मार्सिले, फ्रांस में, WACRA अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक शोध पत्र पेश करना था, जो उन दिनों एक दुर्लभ होता था। ऐसी यात्राओं के लिए बोर्ड की अनुमति आवश्यक थी। पांच साल पहले प्रोफेसर पाठक की अंतिम यात्रा के बाद, केवल दूसरी बार कोई संकाय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में जा रहा था। सामरिक प्रबंधन (strategic Management) पाठ्यक्रम उसके तुरंत बाद प्रारम्भ होना था।

दुर्भाग्य से 25 जून, 1998 को एक दुर्घटना गयी। एक विवाह समारोह में परिवार के सदस्यों को लेकर जा रही उनकी मिनी बस राजमार्ग पर कुलाटी मारती हुई उलट गयी। उसके पहिये आसमान कि ओर थे। "मैंने उस दिन मौत तो बहुत करीब से देखा" डॉ पाठक बोले। "सौभाग्य से एक पुलिस वैन ने इसे निकटतम अस्पताल पहुंचाया। परिवार के पंद्रह में से बारह सदस्य बुरी तरह घायल हुए, जिनमें डॉ पाठक भी शामिल थे। उनके बाएं हाथ की उंगली कुचल गयी थी और दाहिने कंधे की हड्डी में दरार आ गयी थी। वापसी के लिए अब कोई रेल आरक्षण भी उपलब्ध नहीं था और सड़क यात्रा के लिए स्थिति (condition) ठीक नहीं थी। "मैं चिंतित था और टूटा हुआ महसूस कर रहा था। क्यों कि कुछ वर्ष पूर्व एक संकाय सदस्य की कलाई में चोट लग जाने पर पूरा कोर्स कैंसिल करना पड़ा था। तब तक मैं ईश्वर के काम करने के तरीकों और उनकी मानव संरचना से भी बिलकुल अनजान था", वे बोले।

एक सप्ताह बाद वह अपने गृहनगर जा सकने की स्थिति में हुए और हड्डी रोग चिकित्सक (orthopaedic surgeon) से मिले। चिकित्सक ने कहा कि कंधे की हड्डी पर प्लास्टर नहीं किया जा सकता है, केवल कोहनी पर गले से लटका कर एक पट्टी बांधी जा सकती थी कोहनी को मदद करने के लिए। उन्होंने यह भी कहा की ठीक होने में २-३ महीने का समय लग सकता है

जब प्रो पाठक ने डॉक्टर से पूछा कि क्या वह इस स्थिति में दो दिन बाद उपरोक्त अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जा सकते है, तो डॉक्टर बहुत ही आश्चर्यचकित हुए । थोड़ी देर के बाद उन्होंने खुद को संभाला और फिर पूछा कि प्रोफेसर पाठक कैसे जाएंगे और क्या वे भीड़ के संपर्क में आएंगे? प्रो पाठक ने जवाब दिया कि वह टैक्सी और हवाई जहाज से यात्रा करेंगे और भीड़ के संपर्क में नहीं आएंगे । यह सुनने के बाद डाक्टर ने हाँ कर दी ।

DO NOT COPY

प्रोफेसर पाठक ने सोचा कि यद्यपि वह हाथ से भार नहीं उठा सकते, पर वे चल सकते थे और दो चोटों के अलावा और सब ठीक थे। वह बाजार में गए और थोड़ा बड़ा हैंडबैग खरीदा। उन्होंने यह भी महसूस किया कि दोनों चोटें अलग अलग जगहों पर थीं। फिर उसने सबसे बड़ी आस्तीन वाले शर्ट को चुना और बाएं हाथ के अंगूठे और तर्जनी के साथ पहनने की कोशिश की। धीरे धीरे उन्होंने बायीं आस्तीन भी पहन ली क्यों कि कोहनी ठीक थीं, हालांकि कंधे की हड्डी में दरार थी। उन्होंने बैग में अन्य सामानों को धीरे-धीरे पैक किया और धीरे-धीरे बैग के फीते को दाहिने हाथ से उठाकर उसे बाएं कंधे पर रखा। धीरे-धीरे वे खड़े हो गए। अब वह यात्रा के लिए तैयार थे।

चिकित्सक की अनुमति प्रो पाठक के लिए एक सुखद अनुभव था। लखनऊ से मार्सिले तक कितने सारे लोगों ने उन्हें आराम देने के लिए स्वयमेव सेवा की थी। उन्होंने अपनी यात्रा सफलतापूर्वक समाप्त कर ली, “बदलाव प्रबंधन” पर उनके केस लेखन की बहुत तारीफ हुई। पर वापस लौटते हुए, उन्होंने अपना चश्मा भी रास्ते में कहीं खो दिया। जब वह लखनऊ पहुंचे तो वह ना हीं दाहिने हाथ से नहीं लिख सकते थे था और न ही आँखों से पढ़ सकते थे।

लेकिन अब कक्षा का संचालन कैसे हो? उनके पास चश्मा नहीं था, कक्षा के लिए तैयारी कैसे किया जाए? "सौभाग्य से 1996 में मेरी केस बुक प्रकाशित हो गई थी और पहले कुछ सत्रों में किताबों के केस (cases) थे या जिन्हें मैंने 10 से अधिक वर्षों से पढ़ाया था। लेकिन कक्षा का संचालन कैसे करें मेरा दाहिना हाथ कमर से ऊपर नहीं उठ रहा था। मैंने बाएं हाथ से लिखने की कोशिश की, लेकिन यह काम नहीं किया। अगले दिन मैंने बाएं हाथ के सहारे से दाहिने हाथ की कलाई को थोड़ा ऊपर उठाया और ब्लैक बोर्ड पर नीचे से लिखना शुरू कर दिया। अगले दिन कलाई को थोड़ा और अधिक उठाने की कोशिश की। हर दिन मैंने थोड़ा और अधिक उठाने की कोशिश की। दो हफ्तों के भीतर मैं बोर्ड के शीर्ष पर भी लिख सकता था ।शेष पाठ्यक्रम आसानी से समाप्त हो गया। यहां तक कि डीन का कामकाज और निदेशक (जिसका कार्यकाल समाप्त हो चुका था, और एक दिन भी बढ़ाया नहीं जा रहा था) आशिंक का कार्यभार भी मैं उठा सका । डॉक्टर ने कहा कि अगर मैंने कक्षाओं का संचालन करने के लिए साहस नहीं किया होता, तो ठीक होने में बहुत अधिक समय लग सकता था।

मुझे अनुभव हुआ कि परमेश्वर ने हमारे शरीर को एक तात्कालिक तरीके से उपयोग करने के लिए बहुत लचीलापन प्रदान किया है। भगवान ने हमें बहुत कुछ दिया है, लेकिन हमें इसका एहसास नहीं है। यदि चार कोर्स (120 घंटे की पढ़ाई) का भार केवल 3 महीने की अवधि में उठाया जा सकता है, तो कम से कम 120 घंटे की पढ़ाई की नीति के खिलाफ संकाय सदस्यों ने सन 2009 में विरोध क्यों किया? क्या उन्हें एहसास है कि सर्वशक्तिमान ने उन्हें एक वर्ष में कम से कम 16 पाठ्यक्रम बराबर काम करने की क्षमता का उपहार दिया है, केवल 6 नहीं। यह सोच ही हमें समाज की उतनी सेवा करने से वंचित रखती है जितना हम कर सकते हैं", प्रो पाठक ने निष्कर्ष निकाला।

अठारह साल बाद, प्रोफेसर पाठक (सेवानिवृत्ति पश्चात्), मन ही मन मुस्कुराए जब उन्हें यह पता चला कि आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार उन्होंने वर्ष 1998-99 में (4 नहीं) केवल डेढ़ कोर्स पढ़ाया था ।